भजन

रस्में इस जहां की बड़े शौक से निभाते है
जाने क्यूं अर्श के वादों को भूल जाते है

1) अर्श से आये थे ये कह कर के न भूलेंगें कभी
आज एक पल भी कभी याद वो न आते हैं

2) है खबर उनके सिवा कोई नही है अपना
जान करके भी यूं अन्जान हुए जाते हैं

3) गैर होता तो कोई दिल में न शिकवा करते
टाज अपने ही सभी गैर हुए जाते है